पुण्यतिथि पर विशेष...

परदादी – देह में रहते विदेही

● ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी, शान्तिवन

राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जिन्हें दैवी परिवार 'परदादी' कहकर सम्मानित करता था, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका तथा पूर्वी क्षेत्रों की मुख्य संचालिका थीं। आपका त्याग, तपस्या, उच्च धारणाएँ तथा निर्मलता हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। आपने 15 मार्च, 2013 में अव्यक्त स्वरूप धारण कर लिया। प्रस्तुत हैं पुण्यतिथि पर विशेष संस्मरण – सम्पादक

विदेही अवस्था, अशरीरी अवस्था, न्यारे-पन की अवस्था हमने परदादी में देखी। परदादी को साकार बाबा ने सन् 1964 में मुम्बई से कोलकाता भेजा। वहीं से परदादी जी आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा और नेपाल में सेवा करने के निमित्त बनी। वर्तमान समय बांग्लादेश भी ईस्टर्न ज़ोन में है। सन् 2003 में जब कोलकाता में विशाल मेला करवाया तब अव्यक्त बाबा ने परदादी को वरदान दिया कि आप सिर्फ बैठ जाना, बाबा अपना कार्य करवा लेगा। इतना बड़ा ज़ोन होने पर भी परदादी के मुख से कभी नहीं सुना कि मेरा ज़ोन है, मेरे इतने सेन्टर हैं, मैं संभालती हूँ। सदैव मुख से निकलता था, बाबा करा रहे हैं। रिंचक मात्र भी मैं-पन, मेरा-पन उनमें नहीं देखा।

शरीर का इतना बड़ा हिसाब-किताब होने के बाद भी चेहरा सदैव मुसकराता हुआ देखा। डाक्टर जब सूई लगाने आता था तो कहती थी, सूई बड़े प्यार से लगाओ। कभी दर्द के वशीभूत चेहरा नहीं हुआ। तबियत ठीक न होने पर भी उनका पुरुषार्थ, उनकी अवस्था आश्चर्यजनक थी। जैसा नाम (निर्मलशान्ता) वैसी ही उनकी सहनशक्ति की स्टेज नज़दीक से देखने को मिली। जितनी शारीरिक कमज़ोरी, मनोबल उतना ही ऊँचा। कमाल बाबा की है, इन दादियों की है, बाबा ने इनके अन्दर कूट-कूट कर शक्तियाँ व गुण भर दिये हैं। उनके साथ बिताये हुए पल, उनके बोल, उनकी स्थिति आदि की स्मृति निरन्तर प्रेरणा देती है।

एक बार की बात है, परदादी हास्पिटल में थी। बाबा की मुरली में आया, अष्ट रत्नों में आने वाले बच्चे सीधे मूलवतन में जायेंगे, 108 की माला वाले भी कुछ सज़ा खाकर जायेंगे। हमने पूछा, दीदी, आप कौन-सी माला के दाने हो? उन्होंने झट उत्तर दिया कि हम तो अष्ट रत्न में आने वाली हूँ, जब अन्तिम जन्म में श्रीकृष्ण की आत्मा ब्रह्मा के घर में जन्म हुआ तो सतयुग में भी श्रीनारायण के घर में जन्म लूँगी। यह नशा उन्हें सदा रहता था तथा नेत्रों से यह खुशी झलकती थी। चाल-चलन में उनके रॉयल संस्कार हर समय सोते, उठते, बैठते दिखाई देते थे।

उन्हें ज़रा भी अभिमान नहीं था कि मैं ब्रह्मा बाबा की बेटी हूँ। यदि कोई सामने से कहता था, ये ब्रह्मा बाबा की बेटी हैं तो झट उसे कहती थी, तुम नहीं हो क्या? हास्पिटल में जितनी बार जाती थी, डाक्टर की सेवा करती थी। सभी डाक्टर हाथ जोड़ कर कहते, नमस्ते, तो जवाब देती थी, सदा रहो हँसते। यह उनका विशेष मंत्र होता था। सदैव खुशी की खुराक खाते रहो, खुश रहो, आबाद रहो, यह उनका महान मंत्र था। एक बार किसी बहन ने उनसे पूछा, आपके

पास बाबा मिलने आते हैं? परदादी ने कहा, दोनों समय बाबा आते हैं, सिर पर हाथ घुमा कर जाते हैं।

एक बार निर्वैर भाई साहब परदादी से मिलने हास्पिटल आये। किसी ने पूछा कि ये कौन हैं? तो झट कहने लगी, ये निर्वैर हैं जिनका किसी से वैरभाव नहीं। इस प्रकार हर बात में ऐसा राज़युक्त जवाब देती थी, जो सुनने वाला मुग्ध हो जाता था। परदादी ने कभी संकल्प में भी व्यर्थ नहीं सोचा होगा, गुप्त रूप से अनेकों की सेवा करती रहती थी। इस प्रकार वे दुआओं का स्टॉक जमा कर, पुण्य की पूँजी साथ लेकर गई।

एक बार परदादी हास्पिटल में थी। डाक्टर उन्हें देखने के लिए आए और कहने लगे, आप सभी दादियों की लम्बी आयु का राज़ क्या है? मैंने जवाब दिया, ये हमारे यज्ञ के पिल्लर हैं, फाउण्डेशन हैं, इन दादियों के सहारे हमारा यज्ञ चल रहा है। डाक्टर झट कहने लगा कि दुनिया में कोई बुजुर्ग होता है, बीमार होता है वह खुद कहता है, भगवान हमें उठा लो परन्तु आपके आश्रम में इन दादियों की तबियत इतनी नाजुक होते भी कभी मुख से नहीं सुना कि भगवान हमें उठा लो। इनके चेहरे से, नेत्रों से बहुत शक्तिशाली वायब्रेशन आते हैं। कमाल है इन दादियों की! जब जानकी दादी को देखते, परदादी को देखते, गुलजार दादी को देखते तो वे आश्चर्यचकित होते। यह ईश्वरीय ज्ञान का फल है।

परदादी स्नेह की मूर्ति थीं। हम बहनों को सदैव कहती थीं, मुझे पहले प्यार करो तब मैं चारपाई से उठूँगी। कुछ पिलाते थे तो भी कहती थीं, पहले प्यार करो, फिर पीती थीं। प्यार और स्नेह से बाबा ने बचपन से परदादी को पाला था। अन्त तक भी वे प्यार की पालना में पलती रहीं। उनके पदचिन्हों पर चलने का दृढ़ संकल्प ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

❖

ज्ञान-योग से जाग जाती है सुप्त ऊर्जा

ब्रह्माकुमार विजय गुप्ता, जयगाँव (प.बंगाल)

परमात्मा ने हम आत्माओं को अनेक अलौकिक आंतरिक शक्तियाँ उपहार स्वरूप दी हैं जो कि अभी सुप्त अवस्था में हैं। जब योग और ज्ञान के निरंतर अभ्यास से भीतर की सोयी हुई दिव्य ऊर्जा जागती है तो जीवन उसी तरह पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो जाता है जैसे किसी बंद कमरे की कोई ईंट निकल जाने से उस झरोखे से सूर्य की किरणें प्रवेश कर उसे आलोक से भर देती हैं। योग और ज्ञान के प्रभाव से जीवन में दिव्य गुण प्रवेश करते हैं, वाणी में शहद-सी मिठास घुल जाती है। सोच पूर्ण रूप से सकारात्मक हो जाती है।

मनुष्य अपना भाग्य, अपने अच्छे व बुरे कर्मों द्वारा ही रचता है। सुख और दुख हम अपने कर्मों द्वारा स्वयं प्राप्त करते हैं। सुख में हैं तो कारण हम हैं, दुख में हैं तो दोषी हम हैं, इसमें दूसरों पर दोषारोपण नहीं कर सकते। हमारा जन्म इस धरती पर अकारण ही नहीं हुआ है। परमात्मा पिता हम से कुछ विशेष कार्य कराना चाहते हैं। प्रभु ने अपने कार्य के लिए हम बच्चों को चुना है, हम बहुत ही भाग्यशाली आत्माएँ हैं। हम परमात्मा की दिव्य शक्तिपुंज संतान हैं। अपने आप को कभी दीन-हीन ना समझें। हमारे विचार और ऊँचे कर्म ही हमें पुण्यात्मा और देवता बनाते हैं। परमात्मा पिता ने कहा है, आँखों से बुरा मत देखो, कानों से बुरा मत सुनो, मुँह से बुरा मत कहो, हाथों से बुरा मत करो और मन से बुरा मत सोचो। ये महावाक्य हमारी कर्मेन्द्रियों से जुड़े हुए हैं। इनके जब हम मालिक हो जाते हैं, तो जीवन में परमात्मा की रोशनी उतर आती है, चेतना सज़ग हो जाती है। सोया हुआ इंसान दूसरों को क्या जगायेगा, जगा हुआ ही जगा सकता है। इन्द्रियों को वश करके हमारा जीवन कुम्भरण की नींद सोने वालों को जगाने में लग जायेगा। हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा। हम बदलेंगे, जग बदलेगा और इस महान कार्य के लिए परमात्मा पिता सदा हमारे साथ हैं। ❖